तंबाकू कंपनियों ने दिग्गजों को खरीदा था

यह जानी-मानी बात है कि जब धूम्रपान के खतरे स्पष्ट सामने आने लगे थे, तो दुनिया की तंबाकू कंपनियों ने पैसा देकर ऐसे शोध करवाए थे कि धूम्रपान के खतरे कम दिखें। अब पता चला है कि तंबाकू कंपनियों ने कुछ दिग्गज बुद्धिजीवियों को धूम्रपान की वकालत करने के लिए भी पैसे दिए थे।

लोगों के दिल-दिमाग पर असर डालने के लिए तंबाकू कंपनियों ने अर्थशास्त्रियों, दार्शनिकों और समाज वैज्ञानिकों का एक पूरा नेटवर्क तैयार किया था। हाल ही में उजागर हुए दस्तावेज़ों से पता चला है कि इस नेटवर्क के सदस्यों ने धूम्रपान के पक्ष में ज़ोरदार अभियान छेड़ा था।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के साथ मिलकर इन दस्तावेज़ों का एक अध्ययन कोलेरैडो की एन लैण्डमैन ने प्रकाशित किया है। उन्हें उक्त दस्तावेज़ *लीगेसी टोबेको डाक्युमेंट्स लायब्रेरी* से प्राप्त हुए। इस लायब्रेरी में तंबाकू उद्योग से सम्बंधित 80 लाख दस्तावेज़ संग्रहित हैं, जिन्हें हाल ही में सार्वजनिक किया गया है।

दस्तावेज़ों से पता चलता है कि मनोवैज्ञानिक हैन्स आइसेन्क और दार्शनिक रॉजर स्क्रटन इस नेटवर्क से निकटता से जुड़े थे। यह नेटवर्क 1970 के दशक में अस्तित्व में आया था। यही वह समय था जब धूम्रपान के खतरों पर व्यापक बहस छिड़ी हुई थी। दस्तावेज़ बताते हैं कि दुनिया की सात प्रमुख सिगरेट कंपनियों की एक बैठक 1977 में हुई थी जहां 'मिलकर काम करने' का निर्णय लिया गया था। इन कंपनियों में फिलिप मॉरिस, ब्रिटिश अमेरिकन टोबेको और रॉथमैन्स शामिल थीं।

इस अभियान में ऐसे अकादमिक लोगों को जोड़ा गया, जो तंबाकू पर प्रतिबंध के खिलाफ थे। जैसे कुछ अर्थ शास्त्रियों द्वारा यह सवाल उठवाया गया कि क्या धूम्रपान पर प्रतिबंध लगाने से कोई वित्तीय लाभ मिलेगा। इसी प्रकार से एक मानव वैज्ञानिक को जोड़ा गया जिसने दलील दी कि धूम्रपान से लोग एक-दूसरे के करीब आते हैं। यानी धूम्रपान के सामाजिक फायदे हैं। इसी प्रकार से हैन्स आइसेन्क ने बताया कि तंबाकू से जुड़ी बीमारियां वास्तव में जिनेटिक कारणों से होती हैं।

इन सारे मामलों में यह कभी नहीं बताया जाता था कि उक्त विचारों के प्रस्तुतिकरण का तंबाकू उद्योग से क्या सम्बंध है। जैसे 1985 में एक किताब छपी थी *स्मोकिंग एण्ड सोसायटीः टुवर्ड्स ए मोर बेलेंस्ड पर्स्पेक्टिव*। यह पूरी तरह उद्योग द्वारा प्रायोजित थी मगर इस बात का कहीं ज़िक्र नहीं किया गया था। इसी प्रकार से 1998 में रॉजर स्क्रटन ने *दी टाइम्स* में धूम्रपान के पक्ष में तर्क दिया था कि धूम्रपानी लोग स्वास्थ्य सेवाओं पर कम दबाव डालते हैं क्योंकि वे जल्दी मर जाते हैं। बाद में पता चला कि स्क्रटन को जापान टोबेको इंटरनेशनल से वार्षिक भुगतान प्राप्त होता था। तंबाकू कंपनियों ने 1990 के दशक में 50 लाख डॉलर देकर *एसोसिएट्स फॉर रिसर्च इन्टु दी साइन्स ऑफ एन्जॉयमेंट* की स्थापना करवाई। यह समूह स्वास्थ्य में 'शुद्धतावाद' के खिलाफ प्रचार करता था। ***(स्रोत फीचर्स)***